धर्म दर्शन परिचय

An Introduction to Philosophy of Religion

डॉ. हृदयनारायण मिश्र

Scanned with CamScanner

एक ही सत्य को ज्ञान दर्शन बुद्धि से प्राप्त करता है और धर्म अनुभूति से।

धर्म एवं नीतिशास्त्र

नीतिशास्त्र का धर्म से निकटतम सम्बन्ध माना जाता है। सामान्य रूप से यही स्वीकार किया जाता है कि नैतिक व्यक्ति अवश्य ही धार्मिक होता है और धार्मिक व्यक्ति निश्चय ही नैतिक दृष्टि से भला होगा। इन दोनों का सम्बन्ध मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से है। यदि हम इतिहास पर दृष्टिपात करें तो देखने में आता है कि धर्म और नैतिकता का अवियोज्य सम्बन्ध है। प्रारम्भ में नैतिकता और धर्म को अलग नहीं समझा जाता था। आदिम धर्म में मनुष्य का जीवन सरल था। सामाजिक जीवन अविकसित होने से धर्म और नैतिकता का अलगाव नहीं हो सकता था, बाद में दोनों में अन्तर देखा जाने लगा। फिर भी दोनों का सम्बन्ध घनिष्ट रूप में ही था। इन दोनों विषयों का सम्बन्ध निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है—

Scanned with CamScanner

(1) **नैतिक सिद्धान्त धर्म के ही सिद्धान्त हैं**—नीतिशास्त्र में ईश्वर की सत्ता आत्मा की अमरता और इच्छा-स्वातन्त्र्य मान्य सिद्धान्त हैं। धर्म इन मान्यताओं पर ही आधारित है। नीतिशास्त्र यह मानता है कि नैतिक आदर्श ईश्वर में निहित सत्य के रूप में हैं। ईश्वर सर्वोच्च मूल्य है। इसकी प्राप्ति ही नीति का लक्ष्य है। इस प्रकार नीतिशास्त्र और धर्म का घनिष्ट सम्बन्ध है।

(2) **आत्मा की अमरता**—नीतिशास्त्र धर्म की ही तरह आत्मा की अमरता में विश्वास करता है। वर्तमान सीमित जीवन में चूँकि नैतिक आदर्शों की पूर्ण रूप से प्राप्ति नहीं हो सकती, इसलिये असीम जीवन की आवश्यकता है। नैतिक जीवन ही असीम जीवन या आत्मा की अमरता को सिद्ध करता है। साथ ही आत्मा की अमरता से नैतिक आदर्शों की पूर्ति का भी आश्वासन मिलता है। धर्म में आत्मा की अमरता और ईश्वर का अस्तित्व, यही दो मौलिक विषय हैं। अतः नीतिशास्त्र और धर्म में घनिष्ट सम्बन्ध है।

(3) **धर्म नीति का पूर्वगामी है**—कुछ लोग धर्म को नीति का पूर्वगामी बतलाकर धर्म तथा नीति का सम्बन्ध स्थापित करते हैं। डेकार्ट, लॉक तथा बैले आदि विचारकों का मत है कि धर्म नीति की जड़ है। नीति का उद्भव व उत्थान धर्म से होता है। ईश्वर द्वारा नियत कर्म सत् है। ईश्वर द्वारा निषिद्ध कर्म असत् कहा जाता है। ईश्वरीय नियम ही नैतिकता के मानदण्ड स्वरूप हैं।

(4) **नीति धर्म का पूर्वगामी है**—कुछ ऐसे भी विचारक हैं जो नीति को धर्म का पूर्वगामी बतलाकर दोनों का सम्बन्ध निर्धारित करते हैं। इस मत के समर्थक कान्ट तथा मार्टिन्यू आदि हैं। कान्ट का विचार है कि नीति ही हमें धर्म में ले जाती है। मार्टिन्यू भी नैतिक बाध्यता के आधार पर सिद्ध करते हैं कि मनुष्य समाज या राज्य नैतिक बाध्यता उत्पन्न नहीं करते। वह ईश्वर ही है जो नैतिक बाध्यता का कारण है अतः नीति धर्म से परिपूर्ण है। हाफडिंग भी धर्म का आधार नैतिक मूल्यों को मानते हैं। सारांश यह है कि नैतिकता को धर्म का आवश्यक अंग कहा जा सकता है। नैतिकता और धर्म एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

नीतिशास्त्र तथा धर्म में अन्तर

नीति तथा धर्म में निकट सम्बन्ध होते हुये भी अनेक अर्थों में भेद देखा जा सकता है—

(1) **धर्म के अभाव में भी नैतिकता सम्भव है**—कुछ नीतिशास्त्रज्ञों के अनुसार धर्म और नीति आवश्यक रूप में सम्बन्धित नहीं हैं। नीति धर्म पर निर्भर न होकर आत्मनिर्भर है। नीति में धार्मिकता का बोझ अनावश्यक है। कम्टे, मिल तथा स्पेन्सर के अनुसार व्यक्ति बिना धार्मिक हुये भी चरित्रवान हो सकता है।

(2) **धर्म नैतिकता से अधिक व्यापक है**—यद्यपि दोनों का लक्ष्य शुभ की प्राप्ति है परन्तु जहाँ नैतिकता का लक्ष्य केवल शुभ है वहाँ धर्म का लक्ष्य सत्य, शुभ एवं सुन्दर की प्राप्ति है। इसके अतिरिक्त नैतिकता का शुभ अप्राप्य है। नैतिकता का आधार आदर्श है और आदर्श पर चला जाता है न कि वह प्राप्य है। इसके विपरीत धर्म का शुभ वास्तविक आदर्श है। वह वर्तमान जीवन में ही प्राप्त किया जा सकता है।

(3) **नैतिकता तथा धार्मिकता का क्षेत्र**—नैतिकता का क्षेत्र प्रयत्न तथा द्वन्द्व का क्षेत्र है। नैतिक व्यक्ति वासनापूर्ण जीवन तथा आध्यात्मिक जीवन के बीच प्रयत्न, संघर्ष तथा द्वन्द्व करता है। उसे अपनी असीमता का बोध होता है। असीम के क्षेत्र में जाने के लिए; नैतिक आदर्शों के पालन के लिये, उसे सतत संघर्ष एवं युद्ध करना पड़ता है। परन्तु धर्म का क्षेत्र शान्ति एवं विजय

Scanned with CamScanner

का क्षेत्र है। पूर्ण आध्यात्मिकता में संघर्षों और अभावों का नाम नहीं होता। वहाँ पूर्ण सन्तोष आनन्द एवं शान्ति रहती है।

(4) **सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति में नैतिकता अपूर्ण साधन है**—मनुष्य के अन्दर वासना और बुद्धि का द्वन्द्व होता है। इस द्वन्द्व को मिटाने का नाम ही नैतिकता है। नैतिकता से मनुष्य आध्यात्मिक प्राणी बन जाता है। परन्तु नैतिकता सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्ण साधन के रूप में नहीं है। नैतिकता से इतना ही होता है कि हमारे उच्चतम 'स्व' का विकास होता है। सामाजिक नैतिकता से और भी आत्म-विकास होता है। फिर भी केयर्ड के शब्दों में नैतिकता का उच्चतम फल केवल असीम के निकट है। नैतिक जीवन में हम मानव स्वभाव के प्राकृतिक और आध्यात्मिक, यथार्थ और आदर्श, व्यक्तिगत और सार्वभौमिक द्वन्द्व का समन्वय पाते हैं। इसके द्वारा हम असीम को नहीं प्राप्त करते।

(5) **नैतिक जीवन बाधित होता है और आध्यात्मिक जीवन अबाधित**—हम नैतिक जीवन में बँध कर चलते हैं। आध्यात्मिक जीवन तो वह है जो प्रज्ञा तथा आत्मचेतनता के असीम तत्व के साथ हो। वह अबाधित होता है। परन्तु नैतिकता में हम एक दूसरे की इच्छा के साथ बँध कर चलते हैं।

नैतिकता और धर्म अन्योन्याश्रित हैं

उपुर्यक्त विरोधों के होते हुए भी हमने देखा कि कई अर्थों में नीति और धर्म में समानता है। कुछ विचारकों के मत में नीति और धर्म में केवल समानता ही नहीं है, बल्कि दोनों एक दूसरे पर आवश्यक रूप से आश्रित हैं। प्रो० एडवर्ड के शब्दों में 'नैतिकता धर्म के लिए आवश्यक है और धर्म नैतिकता के लिए।'

धर्म के लिए नैतिकता आवश्यक है—व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में धार्मिक व्यक्ति का नैतिक आचरण आवश्यक है। धर्म में आचरण की पवित्रता आवश्यक मानी जाती है। नैतिकता हमारे आचरण को महत्व प्रदान करती है। यही कारण है कि विभिन्न धर्मों के पैगम्बर और धार्मिक नेता नैतिक आचरण पर बल देते हैं। नैतिक गुणों को ईश्वरीय गुणों के तुल्य बताया गया है। अतः नैतिक गुणों का प्रकाशन धर्म में अनिवार्य है। इसलिए नैतिकता धर्म के लिए आवश्यक है।

नैतिकता के लिए धर्म आवश्यक है—नैतिकता अपने में पूर्ण नहीं कही जा सकती। हमने देखा है कि केयर्ड ने नैतिकता को सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति में केवल अपूर्ण साधन माना है। उसकी पूर्णता अध्यात्म में समाहित होने पर ही सम्भव है। वासना और बुद्धि के संघर्ष का परिणाम नैतिकता होती है, जो अध्यात्म की ओर जाती है। ईश्वर-विहीन नैतिकता धर्म का स्थान नहीं ले सकती जैसा कि भाववादी या प्रत्यक्षवादी विचारक मानते हैं। वह धर्म ही है जो नैतिक प्रयत्न तथा संघर्ष को अर्थ प्रदान कर सकता है। धर्म नैतिकता का आधार है तथा नैतिकता धर्म का बाह्य प्रकाशन है। नीति, व्यक्ति तथा समाज के सम्बन्धों पर बल देती है और धर्म व्यक्ति तथा ईश्वर के सम्बन्ध पर। एक दूसरे पर प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं। नैतिकता धर्म को परिशुद्ध करती है और धर्म नीति को प्रेरणा देता है तथा उसका उत्थान करता है। अतः नैतिकता और धर्म अन्योन्याश्रित हैं।

Scanned with CamScanner